स्वदेशी कदन्न खेती की पहल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उदयपुर ज़िले के झाड़ोल ब्लॉक में **कदन्न (मिलेट्स) की खेती की पहल** ने किसानों की नई पीढ़ी के बीच [स्वदेशी बाजरा किस्मों की खेती]() को पुनर्जीवित किया है, जिससे आजीविका प्रोत्साहन के साथ-साथ [प्राकृतिक खेती (नेचुरल फार्मिंग)]() पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

मुख्य बिंदु

- पायलट परियोजना का उद्देश्य **स्थानीय आजीविका को बढ़ाने और सतत् कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने** के **उद्देश्य से** [रागी (Finger Millet), प्रोसो बाजरा, कंगनी (Foxtail) बाजरा तथा कोदो बाजरा]() जैसी बाजरा किस्मों को पुनर्जीवित करना है।
- झाड़ोल के किसानों को **रासायनिक रूप से गहन कृषि पद्धतियों को अपनाने** और बहु-फसल जैसे पारंपरिक फसल विविधीकरण के स्थान पर तेज़ी से लाभ देने वाली वाणिज्यिक एकल-फसल को अपनाने **के कारण फसल हानि का सामना करना पड़ा है।**
- पहचानी गई कदन्न किस्मों को मूल रूप से लघु बाजरा कहा जाता था और स्थानीय रूप से कुरी, बत्ती, कोदरा, चीना, समलाई एवं माल के रूप में जाना जाता था।
- उदयपुर ज़िले में कार्यरत **आंगनवाड़ी केंद्रों** ने बच्चों के लिये पोषण पूरक के रूप में **कदन्न आधारित व्यंजन शामिल करना शुरू कर दिया है।**
- **उदयपुर स्थित स्वैच्छिक समूह सेवा मंदिर** ने एक कार्यक्रम सहयोगी के माध्यम से **लघु बाजरा की ज़मीनी स्तर पर खेती को सुविधाजनक** बनाने के लिये परियोजना शुरू की।
- **कदन्न हस्तक्षेप के परिणाम से उत्साहित होकर, सेवा मंदिर ने हाल ही में 1,000 किसानों के साथ बाज़ार तक पहुँच के लिये एक रूपरेखा तैयार की है।**

[//]()

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/indigenous-millet-cultivation-initiative